BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

AN ABODE OF EDUCATION

KANDRI, MANDAR, RANCHI

B.Ed.

SESSION : 2018-20

EPC-I

PROJECTS

Internal Copy

Guided by :

Asst. Prof

Binita Choudhry

Submitted by :

Name : Nutan Toppo

Roll No. : 041

Date :

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है नूतन टोप्पो बी० एड० की प्रशिक्षु ने **कहानी दो बैलो की कथा, उपन्यास रागदारबरी, भारतीय संस्कृति एवं लेखन कला मणिपुर** पर व्याख्याता बिनिता चौधरी के देख रेख में परियोजना कार्य के रूप में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया ।

इस अवधि में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सराहनीय रहा।

प्रशिक्षु का नाम
नूतन टोप्पो
2018-20

व्याख्याता का नाम
बिनीता चौधरी
हस्ताक्षर

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

आभार ज्ञापन

शिक्षा मुख्य रूप से द्विपक्षीय प्रक्रिया है। जिसमें सीखना और सीखना दोनों महत्वपूर्ण है। बी० एड० कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक स्तर पर निर्देश परामर्श आदि दोनों क्षेत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है।

बी० एड० कार्यक्रम को पूर्ण करने में समस्त व्याख्यातागण का सहयोग रहा। इसमे हमे व्यक्ति में **कहानी दो बैलों की कथा, उपन्यास रगदरबरी,** तथा **भारतीय संस्कृति एवं लेखन कला मणिपुर** की जानकारी प्राप्त हुई।

मैं सक्रिय कार्य के लिए सबसे पहले महाविद्यालय के शैक्षणिक सचिव दीपाली परासर प्रभारी PRO/LEC राकेश कुमार राय एवं व्याख्याता बिनीता चौधरी का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके निर्देशानुशार सक्रिय कार्य पूर्ण किया।

मैं अपने पुस्तकालय अध्यक्ष प्रतिमा जयसवाल कभी धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे सक्रिय कार्य से संबंधित पुस्तकों को उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान किया ।

धन्यवाद

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

INDEX

क्र०सं०	विषय	पृ० सं०	अभियुक्ति
1)	Project 1 - दो बैलों की कथा (प्रेमचंद)	1-16	
2)	Project 2 - रागदरबारी (श्रीलाल शुक्ल)	17-40	
3)	Project 3 - भारतीय संस्कृति एवं लेखन कला (मणिपुर)	41-58	

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

An Abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

EPC-1

Reading And Reflecting On Texts

Project-1

INTERNAL

दो बैलों की कथा

प्रेमचंद

Guided By

Prof/Lect.Binita Choudhary

Submitted By

Name- Nutan Toppo

Roll no- 41

Session- 2018-20

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कहानी

दो बैलों की कथा

(प्रेमचंद)

पर्यवेक्षक

प्रशिक्षु

नूतन टोप्पो

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

लेखक परिचय

प्रेमचंद

प्रेमचंद हिंदी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक है। प्रेमचंद का का जन्म 31 जुलाई 1880 ई० को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता अजायबराय, जो लम्ही में डाकमुंशी थे। मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव, प्रेमचंद को नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चटोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट कहकर संबोधित किया था। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पुरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। आगामी एक पुरी पीढ़ी को

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचंद ने साहित्य की यथार्थवादी परंपरा की नींव रखी। उनका लेखन हिंदी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिंदी के विकास का अध्ययन अधूरा है। वे एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा विद्वान संपादक थे। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में जब हिंदी में तकनीकि सुविधाओं का अभाव था, उनका योगदान अतुलनीय है।

प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह और उपन्यास सम्राट माने जाते हैं। उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएँ ही की जाती हैं। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरुआत की। "भारतीय साहित्य का बहुत सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं।" प्रेमचंद के लेख "पहली रचना" के अनुसार उनकी पहली

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

रचना अपने मामा पर लिखा व्यंग्य थी, जो अब अनुपलब्ध है। उनका पहला उपलब्ध लेखन उनका उर्दू उपन्यास 'असरारे मआबिद' है। प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'हमखुर्मा व हमसवाब', जिसका हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से 1907 में प्रकाशित हुआ।

प्रेमचंद की रचना-दृष्टि विभिन्न साहित्य रूपों में उपन्यास प्रवृत्त हुई। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में कथाकार के तौर पर हुई और अपने जीवन काल में वे उपन्यास सम्राट की उपाधि से सम्मानित हुआ।

जीवन के अंतिम दिनों में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। उनका उपन्यास मंगलसूत्र पूरा नहीं हो सकता। और लंबी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया। उनका अंतिम उपन्यास मंगलसूत्र उनके पुत्र अमृत ने पूरा किया।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(4)

कहानी के पात्रों का परिचय

झूरी - किसान

झूरी की पत्नी

हीरा और मोती - झूरी के बैल

गया - झूरी का साला

कांजीहौस का चौकीदार

कांजीहौस के जानवर - गधा, भैंस, बकरी, घोड़ियों का झुंड

झूरी के गाँव के बच्चे

गया के गाँव के कुछ आदमी

एक छोटी लड़की

एक सांड़

दढ़ियल आदमी

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कहानी का परिचय

'दो बैलों की कथा' कहानी दो बैलों के बारे में है, जो अपने मालिक से बहुत प्यार करते थे और जिसमें आपस में भी गहरी मित्रता थी। दोनों बैल स्वाभिमानी, बहादुर और परोपकारी हैं। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। उनका मालिक उन्हें बड़े स्नेह से रखता है। लेकिन एक बार दोनों बैलों को मालिक के ससुराल भेज दिया जाता है। नये जगह पर उचित सम्मान नहीं मिलने के कारण दोनों बैल वहाँ से भागकर अपने असली मालिक के पास आते हैं। उन्हें दोबारा नये ठिकाने पर भेज दिया जाता है। जब वे दोबारा भागने की कोशिश करते हैं तो कई मुसीबतों में फँस जाते हैं। आखिर में उन्हें किसी कसाई के हाथ नीलाम कर दिया जाता है। लेकिन दोनों बैल उस कसाई के चंगुल से भागने में भी कामयाब हो जाते हैं और अंत में अपने असली मालिक झूरी के पहुँच जाते हैं। यह कहानी 'दो बैलों की कथा' बहुत ही रोचक और सरल भाषा में लिखी गई है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Page No – 5

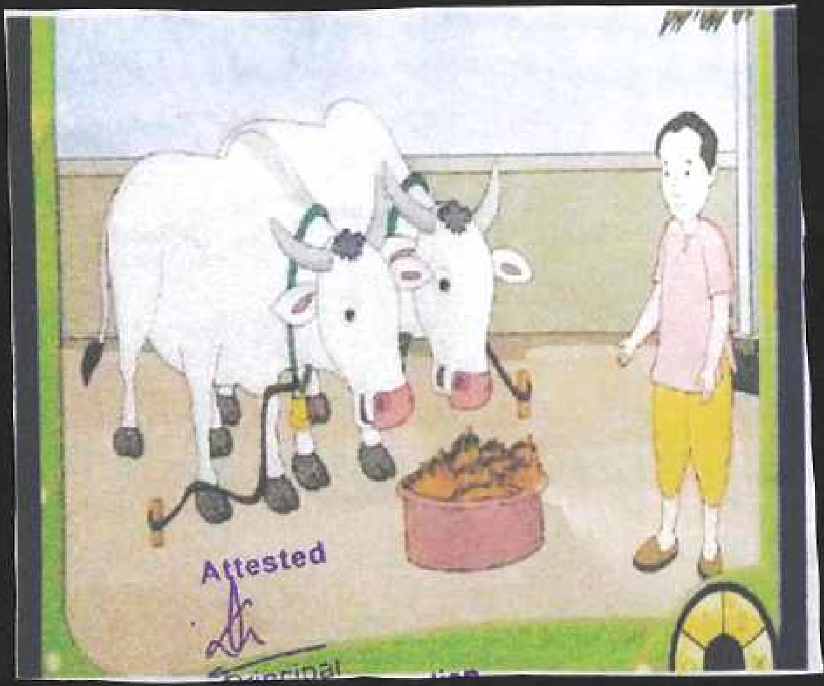

दो बैलों की कथा

लेखक के अनुसार गधा एक सीधा और निरापद जानवर है। वह सुख-दुख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में कभी नहीं बदलता। इसमें ऋषि-मुनियों के गुण होते हैं, फिर भी आदमी उसे बेवकूफ कहता है। बैल गधे के छोटे भाई हैं जो कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट करते हैं।

झूरी काछी के पास हीरा और मोती नाम के दो स्वस्थ और सुंदर बैल थे। वह अपने बैलों से बहुत प्रेम करता था। एक बार झूरी ने दोनों को अपने ससुराल के खेतों में काम करने के लिए भेज दिया। वहाँ उसने खूब काम करवाया लेकिन खाने में रूखा-सूखा ही दिया जाता था। अतः दोनों रस्सी तोड़कर झूरी के पास भाग आए। झूरी उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ और तब उन्हें खाने-पीने की कमी नहीं रही। दोनों बहुत खुश थे। मगर झूरी की पत्नी को उनका भागना पसंद नहीं आया। उसने उन्हें खरी-खोटी और खाली सूखा भूसा खिलाया गया। दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और उन्हें फिर कड़ी मेहनत करनी पड़ी पर खाने को सूखा भूसा ही मिला।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Page No-4

Attested

Principal
arathi College of Education

कई बार काम करते समय मोती ने गाड़ी खाई में गिरानी चाही तो हीरा ने उसे समझाया। मोती बड़ा गुस्सैल था, हीरा धीरज से काम लेता था। हीरा की नाक पर जब खूब डंडे बरसाए गए तो मोती गुस्से से हल लेकर भागा, पर गले में बड़ी रस्सियाँ होने के कारण पकड़ा गया। कभी-कभी उन्हें खूब मारा-पीटा जाता था। इस तरह दोनों की हालत बहुत खराब थी।

वहाँ एक छोटी-सी बालिका रहती थी। उसकी माँ मर चुकी थी। उसकी सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए उन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी। वह रोज दोनों की दशा बहुत खराब थी। एक दिन उस बालिका ने उनकी रस्सियाँ खोल दी। दोनों भाग खड़े हुए। झूरी का साला और दूसरे लोग उन्हें पकड़ने दौड़े पर पकड़ न सके। भागते-भागते दोनों नई जगह पहुँच गए। झूरी के घर जाने का रास्ता वे भूल गए। फिर भी बहुत खुश थे। दोनों ने खेतों में मटर खाई और आजादी का अनुभव करने लगे। फिर एक साँड से उनका मुकाबला हुआ। दोनों ने मिलकर उसे मार भगाया, लेकिन खेत में चरते समय मालिक आ गया। मोती को फँसा देखकर हीरा भी खुद आ फँसा। दोनों काँजीहौस में बंद कर दिए गए। वहाँ और भी जानवर बंद थे। सबकी हालत बहुत खराब थी।
जब हीरा-मोती को रात को भी भोजन न मिला तो दिल में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। फिर एक दिन दीवार गिराकर

Attested
Principal
Bharathi College of Education
... Mandar, Ranchi

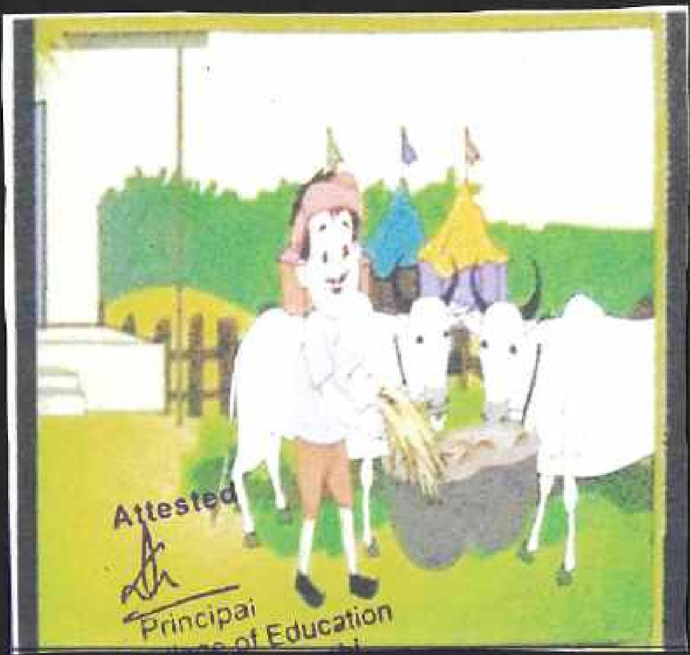
Attested
Principai
Education

को रात को भी भोजन न मिला तो दिल में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। फिर एक दिन दीवार गिराकर दोनों ने दूसरे जानवरों को भगा दिया। मोती भाग सकता था पर हीरा को बंधा देखकर वह भी न भाग सका।

काँजीहौस के मालिक को पता लगने पर उसने मोती की खूब मरम्मत की और उसे मोटी रस्सी से बाँध दिया। एक सप्ताह बाद काँजीहौस के मालिक ने जानवरों को कसाई के हाथों बेच दिया। एक दढ़ियल आदमी हीरा - मोती को ले जाने लगा। वे समझ गए कि अब उनका अंत समीप है। चलते-चलते अचानक उन्हें लगा कि वे जान-पहचान राह पर आ गए हैं। उनका घर नजदीक आ गया था। दोनों अचानक भागे और झूरी के द्वार पर आकर खड़े हो गए। झूरी ने देखा तो बहुत खुश हुआ। वह उनसे लिपट गया। अचानक दढ़ियल आदमी पहुँचा और उन्हें माँगने लगा। झूरी ने कहा - मेरे बैल हैं। दढ़ियल आदमी ने कहा - तुम्हारे बैल कैसे? मैं मवेशीखाने से नीलाम लिए आता हूँ। मैं तो समझा हूँ चुराए लिए आते हो। चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूँगा तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अधिकार है?

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Ranchi

मोती पीछे दौड़ा। गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका, पर खड़ा दढ़ियल आदमी का रास्ता देख रहा था। दढ़ियल आदमी दूर खड़ा होकर पत्थर फेंक रहा था। और मोती विजयी शूर की भाँति उसी रास्ता रोके खड़ा था। गाँव के लोग यह तमाशा देखकर हँस रहे थे।

जब दढ़ियल हारकर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा। हीरा ने कहा- मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।

'अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता।

'अब न आएगा।'

'आएगा तो दूर से ही खबर लूँगा। देखूँ कैसे ले जाता है।

'मर जाऊँगा, पर उसके काम न आऊँगा'। हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता', इसलिए कि हम इतने सीधे हैं।

जरा देर में नाँदों में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के खड़े तमाशा देख रहे थे। सारे गाँव में उछाह-सा मालूम होता था।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

में उछाह-सा मालूम होता था। उसी समय झूरी की पत्नी भी भीतर से दौड़ी-दौड़ी आई और दोनों बैलों के माथे चूम लिए।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निस्कर्ष

'दो बैलों की कथा' प्रेमचंद द्वारा लिखित रचना है। प्रेमचंद अपनी रचनाओं के माध्यम से संदेश देने में माहिर हैं। समाज को अपनी रचनाओं के माध्यम से कैसे जगाया जाए, यह उन्हें बहुत अच्छी तरह आता है। यह कहानी सांकेतिक भाषा में यह संदेश देती है कि मनुष्य हो या कोई भी प्राणी, स्वतंत्रता को पाने के लिए लड़ना भी पड़े, तो बिना विचार किए लड़ना चाहिए। जन्म के साथ ही स्वतंत्रता सबका अधिकार है। दो बैलों की कथा में बैलों के माध्यम से लेखक अपने विचार समाज के समक्ष रखता है। इस कहानी में दो मित्र बैल अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं। यह कहानी दो बैलों के बीच घनिष्ठ भावात्मक संबंध को दर्शाती है। यह कहानी मनुष्य और जानवर के बीच में उत्पन्न परस्पर संबंध का सुंदर चरित्र प्रस्तुत करती है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रश्न — अभ्यास

1. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) झूरी के बैलों का क्या नाम था ?

(ख) लेखक के अनुसार कौन सा जानवर सीधा और निरापद है ?

(ग) मोती का व्यवहार कैसा था ?

(घ) हीरा का व्यवहार कैसा था ?

(ङ) हीरा और मोती कहाँ बंद कर दिए गए ?

(च) काँजीहौस के मालिक ने जानवरों को किसके हाथों बेच दिया ?

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक ने इस कहानी में कौन सा जानवर को सीधा कहा है ? क्यों ?

(ख) काँजीहौस में कैद पशुओं की हाज़िरी क्यों ली जाती थी ?

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(ग) हीरा - मोती गया के घर से क्यों भाग आए?

(घ) छोटी - बालिका को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

(ङ.) किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

(च) हीरा - मोती को आज़ाद होने में किन - किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? वर्णन करें।

(छ) कहानी में बैलों के माध्यम से कौन - कौन से नीति - विषयक मूल्य उभर कर आए हैं?

---

③ खाली स्थानों को भरें

(क) झूरी के पास ______ बैल थे।

(ख) झूरी के बैलों का नाम ______ और ______ था।

(ग) मोती बड़ा ______ था।

(घ) हीरा ______ से काम लेता था।

ङ.) हीरा और मोती का मुकाबला एक ______ से हुआ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(च) दोनों ________ में बंद कर दिए गए।

4) सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (×) का निशान लगाएँ।

(क) झूरी के पास तीन बैल थे। [ ]

(ख) मोती बहुत गुस्सैल था। [ ]

(ग) हीरा और मोती का मुकाबला एक गाय से हुआ। [ ]

(घ) काँजीहौस में पशुओं की हाज़िरी नहीं ली जाती थी। [ ]

(ङ) काँजीहौस में कैद पशु बहुत मोटे और सुंदर थे। [ ]

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

An Abode Of Education

Kandari, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session 2018-20

PROJECT WORK- II

ON

EPC – 1

READING AND RELFECTING TEXT

रागदरबारी(श्रीलाल शुक्ल)

INTERNAL

Guided By

Asst. Prof.

Binita Chaudhary

Submitted by:-

Name :- NUTAN TOPPO

Roll No :- 41

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

लेखक - श्रीलाल शुक्ल

जन्म - 31 दिसम्बर 1925

निधन - 28 अक्टूबर 2011

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

लेखक - परिचय

श्रीलाल शुक्ल (जन्म 31 दिसम्बर 1925 और निधन - 28 अक्टूबर 2011) को जनपद के समकालीन कथा - साहित्य में उद्देश्यपूर्ण व्यंग्य लेखन के लिये विख्यात साहित्यकार माने जाते थे। उन्होंने 1947 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा पास की। 1949 में राज्य सिविल सेवासे नौकरी शुरू की। 1983 में भारतीय प्रशासनिक सेवा से निवृत्त हुए। उनका विधिवत लेखन 1954 से शुरू होता है और इसी के साथ हिंदी गद्य का एक गौरवशाली अध्याय आकर लेने लगता है। उनका पहला प्रकाशित उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज' (1957) तथा पहला प्रकाशित व्यंग्य 'अंगद का पाँव' (1958) है। स्वतंत्र के बाद के भारत के ग्रामिण जीवन की मूल्यहीनता को परत दर परत उघाड़ने वाले उपन्यास 'राग दरबारी' (1968) के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके इस उपन्यास पर एक

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri Mandar, Ranchi

दूरदर्शन धारावाहिक का निर्माण भी हुआ। श्री शुक्ल को भारत सरकार ने 2008 में पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया है।

श्रीलाल शुक्ल अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत और हिन्दी भाषा के विद्वान थे। श्रीलाल शुक्ल संगीत के शास्त्रीय और सुगम दोनों पक्षों के रसिक - मर्मज्ञ थे। 'कथाक्रम' समारोह समिति के वह अध्यक्ष रहे। श्रीलाल शुक्ल जी ने गरीबी झेली, संघर्ष किया, मगर उसके विलाप से लेखक को नहीं भरा। उन्हें नई पीढ़ी भी सबसे ज्यादा पढ़ती है। वे नई पीढ़ी को सबसे अधिक समझने और पढ़ने वाले वरिष्ठ रचनाकारों में से एक रहे। श्रीलाल जी का लिखना और पढ़ना रुका तो स्वस्थ के गंभीर कारणों के चलते। श्रीलाल शुक्ल का व्यक्तित्व बड़ा सहज था। वह हमेशा मुस्कराकर सबका स्वागत करते थे। लेकिन अपनी बात बिना लाग - लपेट कहते थे। व्यक्तित्व की इसी खूबी के चलते उन्होंने सरकारी सेवा में रहते हुए भी व्यवस्था पर करारी चोट करने वाली राम - दरबारी जैसी रचना

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हिंदी साहित्य को दी।

उनका पहला उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज' 1957 में प्रकाशित हुआ। उनका सबसे लोकप्रिय उपन्यास राग दरबारी 1968 में छपा। राग दरबारी का पंद्रह भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेजी में भी अनुवाद प्रकाशित हुआ। राग विराग श्रीलाल शुक्ला का आखिरी उपन्यास था। उन्होंने हिंदी साहित्य को कुल मिलाकर 25 रचनाएं दीं। इनमें मकान, पहला पड़ाव, अज्ञातवास और विश्रामपुर का संत प्रमुख हैं।

1969 में श्रीलाल शुक्ल को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। लेकिन इसके बाद ज्ञानपीठ के लिए 42 साल तक इंतजार करना पड़ा। इस बीच उन्हें बिरला फाउन्डेशन का व्यास, सम्मान, यश भारती और पद्म भूषण पुरस्कार भी मिले। 18 अक्टूबर को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बी. एल. जोशी ने अस्पताल में ही ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया था वर्ष 2008 में शुक्ल को पद्मभूषण पुरस्कार नवाजा गया था।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पात्र परिचय

वैद्यजी — वह सभी गाँवों की राजनीति के पीछे का मास्टरमाइंड है अपने वाक्य तैयार करने और उसके शब्दों को चुनने में बहुत स्पष्ट, वैद्यजी भी आधिकारिक तौर पर स्थानीय कॉलेज के प्रबंधक हैं।

रुप्पन बाबू — वैद्यजी के छोटे बेटे और कॉलेज के छात्रों के नेता, रुप्पन बाबू पिछले कई सालों से 10 वीं कक्षा में रहे हैं, उसी कॉलेज में, जहां उनके पिता प्रबंधक हैं रुप्पन सक्रिय रूप से सभी गांवों की राजनीति में शामिल है और गांव समुदाय द्वारा उनके शानदार गणित के कारण उनका सम्मान किया जाता है। उपन्यास के अंत में, उसके व्यवहार में एक क्रमिक परिवर्तन देखा जा सकता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बद्री अग्रवाल- रुप्पन बाबू के बड़े भाई बद्री अपने पिता की सहभागिता से दूर रहते हैं और खुद को शरीर- निर्माण के अभ्यास में व्यस्त रखते हैं और अपने आश्रय की देखभाल करते हैं।

रंगनाथ इतिहास में एम. ए., रंगनाथ वैद्य जी के भतीजे हैं। वह लगभग 5-6 महीने के लिए छुट्टी पर शिवपालगंज आ गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक शिक्षित व्यक्ति की आंखों के माध्यम से गांवों में दयनीय स्थिति को देखते हुए देखना चाहता है।

छोटे पहलवान- गांव की राजनीति में एक सक्रिय पार्टनर बद्री अग्रवाल के एक, गांव की राजनीति में एक सक्रिय सहभागिता है और वैद्यजी द्वारा बुलाए गए बैठकों में लगातार सहभागिता है।

प्रिंसिपल साहिब- जैसा कि नाम का अर्थ है, प्रिंसिपल साहिब, छांमल विद्यालय इंटर कॉलेज का प्राचार्य है। कॉलेज में कर्मचारियों के अन्य सदस्यों के साथ उनका संबंध साजिश का एक

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

महत्वपूर्ण हिस्सा है।

जोगनाथ — स्थानीय गुंडे, लगभग हमेशा नशे में वह प्रत्येक सिलेबल्स के बीच "एफ" ध्वनि डालने से एक अनूठी भाषा बोलती है।

सनीचर — इनका असली नाम मंगलदास है, लेकिन लोग उसे सनीचर कहते हैं। वह वैद्यजी का नौकर है और बाद में वैद्यजी द्वारा राजनीतिक रणनीति के उपयोग के साथ गांव को कठपुतली प्रधान (नेता) बनाया गया था।

लंगड़ — वह अस्थायी आम आदमी का प्रतिनिधि है जो भ्रष्ट व्यवस्था के सामने झुकाता है, यहाँ तक कि छोटी-सी चीजें भी करने के लिए।

बेला — बेला शिवपालगंज के ही कपड़ा व्यापारी और स्थानीय छंगामल इंटर साइंस कॉलेज की प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष गयादीन की कुंवारी कन्या है। बीस वर्ष की युवती होने के साथ-साथ ग्राम सेविका के संपर्क में आकर उसने फिल्मी गीतों में प्रेमपत्र लिखना भी सीखा है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

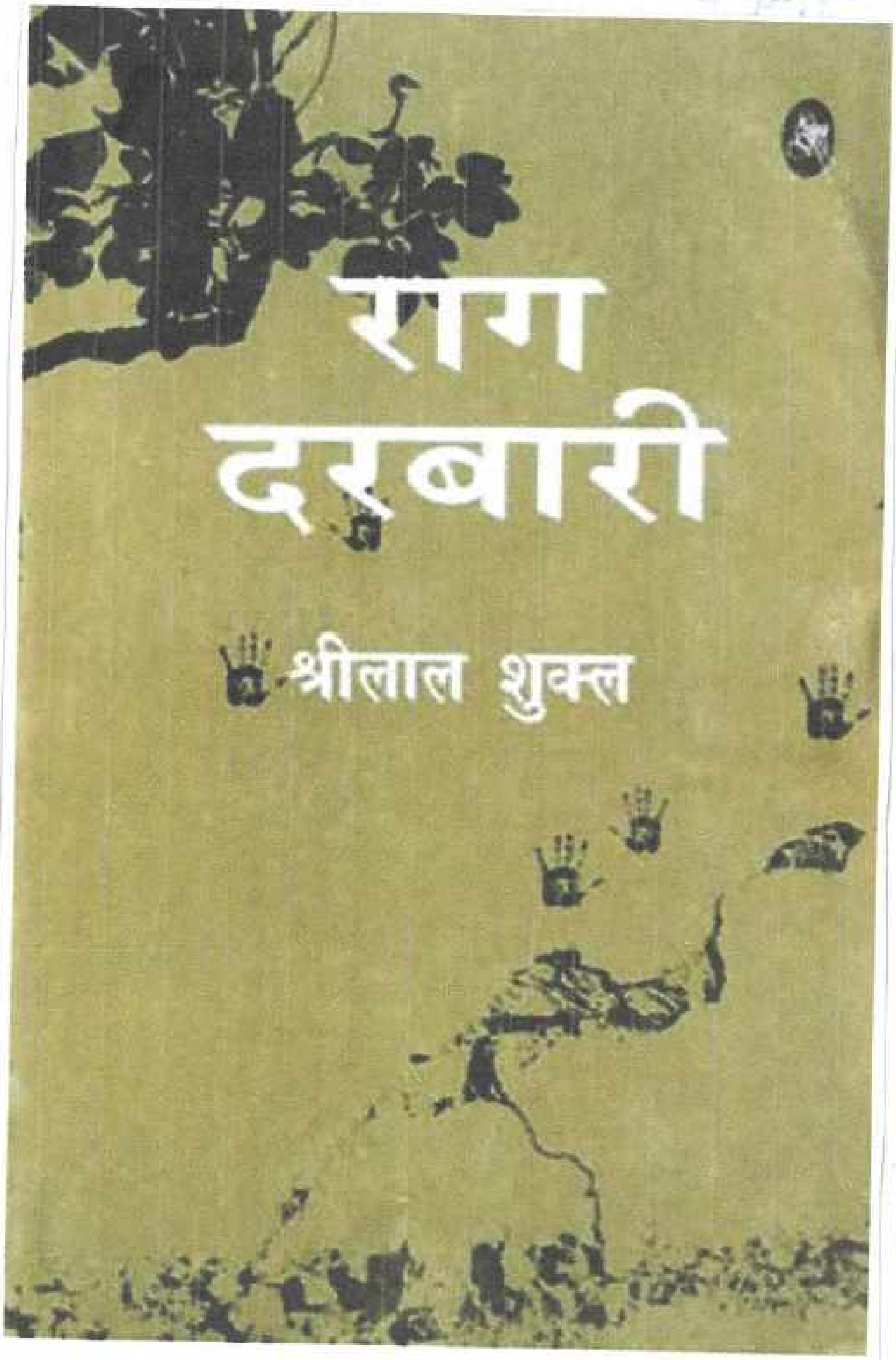

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

उपन्यास का परिचय

शिवपालगंज नगर से कुछ दूर बसा हुआ एक गांव है, यहाँ निष्क्रिय मनोवृत्ति का युवक रंगनाथ जो शोध छात्र है, अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए अपने मामा वैद्यजी के पास आता है। वैद्यजी उस गाँव की राजनीति के आधार-स्तंभ हैं, जिनकी अवस्था 62 साल की है पर राजधानियों में रहकर देश-सेवा करने वाले सैकड़ों महापुरुषों की तरह वे भी उमर के बावजूद बूढ़े नहीं हुए थे और उन्हीं महापुरुषों की तरह वैद्यजी की यह प्रतिज्ञा थी कि हम बूढ़े तभी होंगे जब कि मर जायेंगे और जब तक लोग हमें यकीन न दिला देंगे कि तुम मर गये हो, तब तक अपने को जीवित ही समझेंगे और देश-सेवा करते रहेंगे।

वैद्यक के रूप में उनके दो ही खास नुस्खे हैं- 'गरीबों का मुफ्त इलाज' और 'फायदा न हो तो दाम वापस'। पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास

Attested

Principal
Bharati College of Education
Kendri, Mandar, Ranchi

में पुरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लंबरदार के रूप में करते थे। अब वे को-ऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉलेज के मैनेजर थे। वास्तव में इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने युवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे, इसलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को संभालना पड़ा था।' एक वैद्यक के रूप में रोगों के उन्होंने प्रकट और गुप्त दो वर्ग बना रखे थे। दोनों तरह के रोगियों का इलाज भी दो तरह से करते थे। उनका मानना है कि तमाम रोगों के मूल में ब्रह्मचर्य का नाश होना ही कारण है। इसके नतीजे पर उनका खौफनाक भाषण भी होता है, जिसे सुनकर कॉलेज के अधिकांश लड़के अपने जीवन से निराश होते हैं। ब्रह्मचर्य के लाभ एक दिन वैद्यजी रंगनाथ को भी समझाते हैं तब जाकर रंगनाथ को ब्रह्मचर्य

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

के महत्व का पता चलता है।

रंगनाथ आत्मकेंद्रित व्यक्तित्व का धनी युवक है। उसे किसी से कोई मतलब नहीं रहता है। वह ट्रक में बैठकर शिवपालगंज आता है। अपने ही राग में वह अलमस्त है चाहे ट्रक का ड्राइवर उसे गीयर दबामें रखने के लिए कहे या कोई चपरासी उससे दो रुपये ऐंठ ले, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

शोधप्रज्ञ रंगनाथ एक मंझोली हैसियत का विश्वविद्यालयी युवक है, जो दिशाहीन उस युवा पीढ़ी का युवक है, जो ज्यादा पढ़ा-लिखा अवश्य है पर क्रांति का उत्साह उसमें मृतप्राय है। यही कारण है कि वह अपनी दुर्बलता के कारण न केवल उदासीन और निर्जीव-सा होकर जीवित है अपितु तमाम गलत व्यवस्थाओं को देखता हुआ भी यथास्थिति को का स्वीकारने के लिए विवश है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

रूप्पनबाबू अठारह वर्षों युवक हैं, जो दसवीं में लगातार तीन वर्षों तक अनुत्तीर्ण होने के बावजूद कॉलेज के छात्र हैं। शिवपालगंज में उनकी पहचान स्थानीय नेता के रूप में भी है। 'उनके नेता होने का सबसे बड़ा आधार यह था कि वे सबको एक निगाह से देखते थे।' वे दुबले-पतले, लम्बी गर्दन, लम्बे हाथ और और लम्बे पैर वाले आदमी थे। जननायकों के लिए कल-जलूल और नये ढंग की पोशाक अनिवार्य समझकर वे सफेद धोती और रंगीन बुश्शर्ट पहनते थे और गले में रेशम का रूमाल लपेटते थे। धोती का कोंछ उनके कंधे पर पड़ा रहता था। यों तो देखने में उनकी शक्ल एक घबराये हुए मरियल बछड़े जैसी थी पर उनका रोब अपने पिछले पैरों पर खड़े हिनहिनाते घोड़े जैसा था।

कॉलेज में अध्यापक पढ़ाना-लिखाना छोड़कर एक-दूसरे के विरुद्ध षड्यंत्र रचने में लगे रहते हैं, ऐसी मान्यता रुप्पनबाबू

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

की प्रारंभ से ही रहती है। वह पीड़ित अध्यापक मास्टर खन्ना के गुट के अधिकारों की माँग का समर्थन करता है किन्तु तब वैद्यजी मिस्टर खन्ना से जबरन त्यागपत्र दिलवा देते हैं।

गयादीन वैद्यजी की शोषण एवं आतंकपूर्ण कार्यवाहियों के साथ-साथ प्रिंसिपल की अफसरशाही और अवसरवादी कार्यवाही के विरुद्ध कुछ भी करने को तैयार नहीं रहते हैं। प्रिंसिपल को वैद्यजी का वरदहस्त प्राप्त है। वह वैद्यजी का आँख बंद कर समर्थन करता है। यही कारण है कि मास्टर खन्ना के अधिकार व माँग पत्रों को ठुकरा होता है और उनके विरुद्ध अदालती कार्यवाही करवा कर ऐसी परिस्थिति पैदा कर देता है कि मास्टर खन्ना को आखिरकार त्यागपत्र देना ही पड़ता है।

वैद्यजी जी-हुजूरी-पसंद व्यक्ति हैं किंतु रुप्पन की हालावादी मनोवृत्ति का वे विरोध नहीं करते हैं। रंगनाथ की वेदना को समझकर भी अपनी विवशता प्रकट करते

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हुए वह कहता है कि अपनी चार बहनों का विवाह करना है इसीलिए मास्टर खन्ना की मांगें अनिवार्य और उचित जानकर भी वह स्वीकार नहीं करता है और वैद्यजी के आदेशों का वह पालन करता है।

बेला एक स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्य में कुशल और रामायण और माया मनोहर कहानियां पढ़ लेने भर को पढ़ी-लिखी है। तबीयत और जिस्म दोनों से उसे प्रेम करने लायक समझकर रुप्पन बाबू उससे प्रेम करते हैं, पर बेला यह बात नहीं जानती है। बेला बड़ों की आज्ञा मानती है और दरवाजे से बाहर नहीं निकलती है।

उस गाँव में कुछ मास्टर भी रहते हैं। मास्टर खन्ना उनमें बेवकूफ और मालवी भी कुछ-कुछ वैसे ही थे। जब गयादीन के यहाँ चोरी हो गयी तब सातों मास्टर एक साथ उनके यहाँ चोरी को लेकर सहानुभूति दिखाने आये थे।

रंगनाथ को रुप्पन बाबू पर भरोसा इसलिए था कि कभी-कभी प्रिंसिपल को गालियां देकर वे कॉलेज के दुर्भाग्य की बात

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

गालियां देकर वे कॉलेज के दुर्भाग्य की बात करते थे।

बद्री पहलवान के अन्यत्र चले चले जाने पर रंगनाथ अकेला छत पर टहल रहा होता है जबकि सोता वह कमरे में है। रात के लगभग ग्यारह बज रहे होते हैं। रंगनाथ को नींद नहीं आती है। वहाँ एक रेडियो था, जो कॉलेज का था, पर शास्त्रीय संगीत का एक प्रोग्राम अपनी आखिरी मंजिल पर पहुँच रहा था, जाड़े की अंधेरी रात है। रंगनाथ को रुप्पन बाबू की याद आते ही अचानक बेला नाम की लड़की याद आयी, जिसे रंगनाथ ने कभी देखा न था पर उसने सुना था कि रुप्पन बाबू ने उसे एक प्रेम-पत्र लिखा है किंतु दूसरी रात को रंगनाथ जब अकेला छत पर लेटा था तब उस बेला की नहीं, वैद्यजी का गुस्से में तपा हुआ वीर्यमय चेहरा याद आया।

वैद्यजी की यही विशेषता थी कि वे भुनभुनाते नहीं थे, आज उन्होंने भुनभुनाकर रंगनाथ का दिल तोड़ दिया। उसे आशा थी कि वे गरजेंगे उसके बाद बरसेंगे। पर पहले तो वे गरजे और बाद में भुनभुनाकर बैठ गये और

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

दुम हिलाने और भुनभुनाने का काम साथ-साथ निभाकर उन्हें इशारा किया था कि को-ऑपरेटिव यूनियन के हिसाब का स्पेशल ऑडिट कराना जरूरी होगा।

रंगनाथ रात में ठीक से सो नहीं पाया था, सोच भी नहीं पाया था, पर जागते ही अपने बारे में एक बात उसने सोच ली। कुछ महीने पहले, एक लंबी बीमारी से उठने के बाद वह वहाँ केवल अपनी तन्दुरुस्ती सुधारने आया था। अचानक उसने सोचा कि उसकी तन्दुरुस्ती सुधारने आया था। कुछ मामलों में उसे रप्पनबाबू पर भरोसा था। वह जानता है कि जब वे बेवकूफ बनते हैं तो अपनी इच्छा से, बेवकूफ बनना उनके लिए लगभग ऐय्याशी की बात थी न कि मजबूरी या शौक। रंगनाथ सोचता है कि ऐसी कोई बात वैद्यजी जरूर करने जा रहे हैं क्योंकि वैद्यजी के क्रोध की नुमाईश देखकर लगा था कि वे तिलमिलाये हुए हैं।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रिंसिपल साहब कॉलेज की ओर से आते दिखायी दिये। हाल समाचार पूछे जाने पर रंगनाथ ने बड़े ही शिष्टाचार से कहा – आपकी कृपा से। और बाद में पुनः पूछने पर ही रंगनाथ ने कहा– रिसर्च का काम इतने दिन से छूटा हुआ है। गर्मियों में पूरा करना है। जब प्रिंसिपल साहब ने कहा – "आप जानते ही हैं खन्ना ने इस्तीफा दे दिया है। इतिहास के लेक्चरर की जगह खाली हुई है उसी में आप क्यों नहीं लग जाते। ठाठ से मामा के यहां रहिए, कॉलेज में दो घंटा पढ़ाइए बाकी समय रिसर्च कीजिए। यह सुनकर रंगनाथ को जान पड़ा कि उसकी देह का सारा खून झपटकर साँप की तरह उसके मत्थे में पहुँच गया है। उसने तीखेपन के साथ कहा– मैं आपके यहाँ मास्टरी करूँगा? और वह भी खन्ना की जगह। खन्ना को कॉलेज से निकालने की बात रंगनाथ को मालूम थी। प्रिंसिपल की बात - जगह खन्ना के जाने से हुई या मालवीय के मरने से - आपको इससे क्या मतलब? आपके घर का बाग है, आम खाइए। पेड़ क्यों गिन रहे हैं?

Attested

Principal
Bhartni College of Education
Kanke, Mandar, Ranchi

इसका कोई जवाब न पाकर वे रंगनाथ को पुचकारने लगे। अंत में जब रंगनाथ का तमतमाता चेहरा दिखायी पड़ा तब प्रिंसिपल ने उदास होकर कहा —

"बाबू रंगनाथ, तुम्हारे विचार बहुत ऊँचे हैं। पर कुल मिलाकर उनसे यही साबित होता है कि तुम गधे हो।

मदारी के सामने मुँह फुलाये बैठे दोनों को देखने से लगा जैसे कि वे उठेंगे तो भरतनाट्यम से नीचे नहीं नाचेंगे। डुगडुगी एक नयी ताल पर बज रही थी।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

रागदरबारी के माध्यम से आधुनिक शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार

राग दरबारी व्यंग्य- कथा नहीं है, इसका संबंध एक बड़े नगर से कुछ दूर बसे हुए गाँव शिवपालगंज की जिंदगी से है, जो वर्षों की प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों के सामने घिसट रही है। गाँव की कथा के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को सहजता और निर्ममता से अनावृत करने वाला उपन्यास है। रागदरबारी। शुरू से आखीर तक इतने निस्संग और सोद्देश्य व्यंग्य के साथ लिखा गया हिंदी का शायद यह पहला वृहत उपन्यास है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

फिर भी यह उसी ज़िंदगी का दस्तावेज़ है।

उपन्यास का महत्व

1968 में राग दरबारी का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण साहित्यिक घटना थी। 1970 में इसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 1986 में एक दूरदर्शन-धारावाहिक के रूप में इसे लाखों दर्शकों की सराहना प्राप्त हुई। वस्तुत: राग दरबारी हिंदी के कुछ कालजयी उपन्यासों में एक है। लेखन 1964 के अंत में शुरु हुआ और अपने अंतिम रूप में 1967 में समाप्त हुआ। 1968 में इसका प्रकाशन हुआ और 1969 में इस पर मुझे साहित्य अकादमी

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

का पुरस्कार मिला। तब से अब तक इसके दजनों संस्करण और पुनर्मुद्रण हो चुके हैं। 1969 में ही एक ही सुविज्ञात समीक्षक ने अपनी बहुत लंबी समीक्षा इस वाक्य पर समाप्त की : अपठित रह जाना ही इसकी नियति है।

इस उपन्यास की भाषा कहानी की जान है। ग्रामीण तथा शहरी परिवेश का इतना अनोखा वर्णन शायद ही कहीं देखने को मिलता है। उपन्यास के कुछ अंश इस प्रकार हैं: शहर का किनारा। उसे छोड़ते ही भारतीय देहात का महासागर शुरू हो जाता है वहीं एक ट्रक खड़ा था। जैसे कि सत्य के होते हैं, इस ट्रक के भी कई पहलू थे। पुलिसवाले उसे एक ओर से देखकर कह सकते थे

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कि वह सड़क के बीच में खड़ा है, दूसरी ओर से देखकर ड्राइवर कह सकता था कि वह सड़क के किनारे पर है चालू फैशन के हिसाब से ड्राइवर ने ट्रक का दाहिना दरवाजा खोलकर डैने की तरह फैला दिया था। इससे ट्रक की खूबसूरती बढ़ गई थी, साथ ही यह खतरा मिट गया था कि उसके वहाँ होते हुए कोई दूसरी सवारी भी सड़क के ऊपर से निकल सकती है। सड़क के एक ओर पेट्रोल-स्टेशन था; दूसरी ओर छप्परों लकड़ी और टीन के सड़े टुकड़े और स्थानीय क्षमता के अनुसार निकलनेवाले कबाड़ की मदद से खड़ी की हुई दुकानें थीं। पहली निगाह में ही मालूम हो जाता था कि दुकानों की गिनती नहीं हो सकती। भाषा के माध्यम से व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष

'रागदरबारी' उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास है। इसका प्रत्येक प्रसंग व्यंग्य-चेतना से पाठक को चमत्कृत करनेवाला है। इस उपन्यास में वर्तमान जीवन के समस्त अवमूल्य, विसंगतियाँ, सामाजिक विघटन, युवाओं की दिशाहीनता, रिश्वतखोरी, असुरक्षा-बोध, अस्वस्थ नेतृत्व, गुटबाजी, पलायन, विद्रूपता आदि सभी कुछ एक साथ उपलब्ध हैं। व्यंग्य इस उपन्यास में न केवल लेखक की यथार्थवादी दृष्टि का समर्थ प्रमाण है अपितु यथार्थ को सर्वथा नए रूप में उपस्थित करने में वह सहायक हुआ है। इतना ही नहीं लेखक ने उपन्यास में यत्र-तत्र वास्तविकता की पकड़ को सुदृढ़ता से अपने नियंत्रण में रखने के लिए विनोद और आइरनी का आश्रय लिया है, जिससे शिवपालगंज की प्रतीकात्मकता

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Mandar, Ranchi

सफलता के साथ अभिव्यंजित हो सकी है। उपन्यास-कला की दृष्टि से यह निश्चय ही सर्वोत्कृष्ट और विशिष्ट उपन्यास है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रश्न - अभ्यास

I लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) श्री लाल शुक्ल का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

(ख) श्रीलाल शुक्ल के प्रमुख उपन्यास कौन से हैं ?

(ग) श्रीलाल शुक्ल का निधन कब हुआ ?

II दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) उपन्यास कला की दृष्टि से रागदरबारी उपन्यास की समीक्षा करें।

(ख) बेला का चरित्र चित्रण करें।

(ग) रुप्पन बाबू का चरित्र-चित्रण करें।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

An Abode Of Education

Kandari, Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session 2018-20

PROJECT WORK- III

ON

EPC – 1

READING AND RELFECTING TEXT

भारतीय संस्कृति एव लेखन कला

मणिपुर

INTERNAL

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Guided By

Asst. Prof.

Binita Chaudhary

Submitted by:-

Name :- NUTAN TOPPO

Roll No :- 41

An Abode Of Education

[illegible], Mandar, Ranchi

B.Ed.

Session 2019-20

PROJECT WORK [illegible]

मानचित्र - मणिपुर

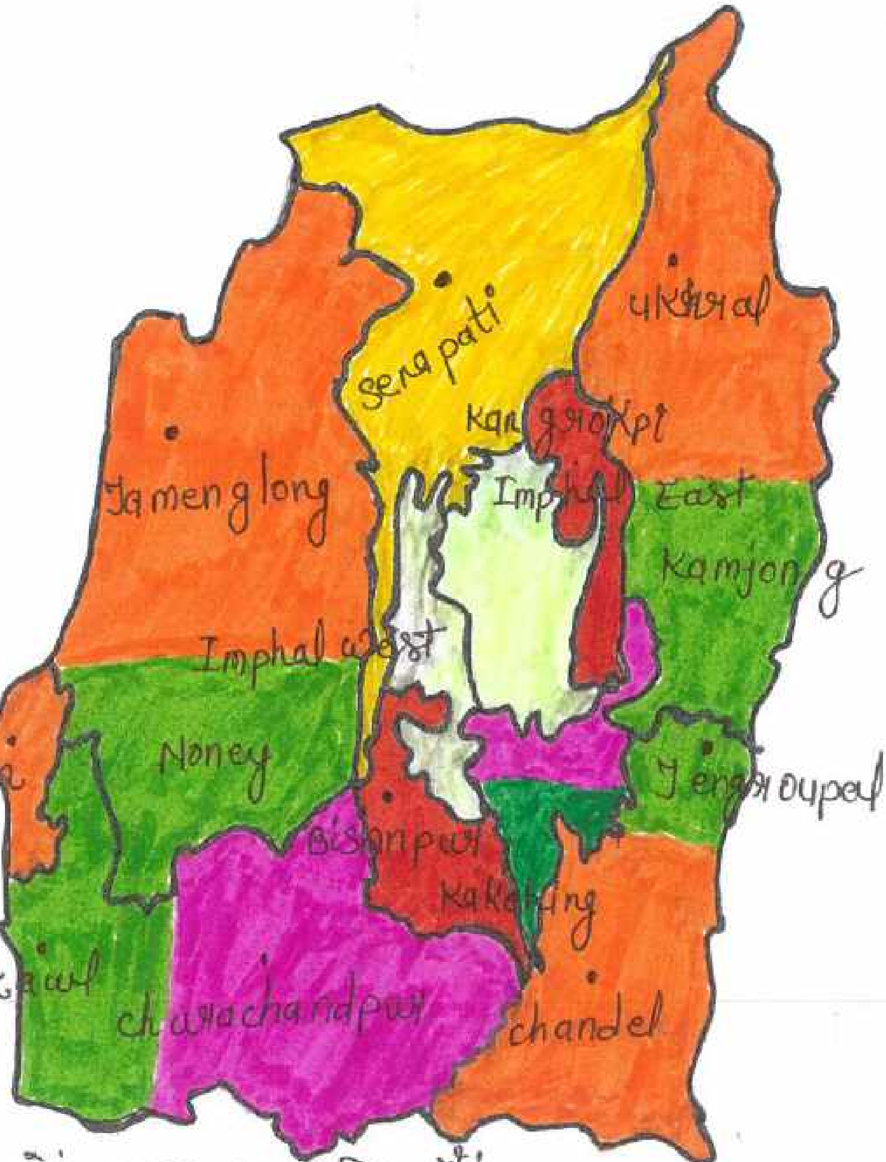

मणिपुर में कुल 16 जिले हैं—

1) विष्णुपुर जिला
2) चुरचंदपुर जिला
3) चंदेल जिला
4) इंफाल ईस्ट जिला
5) सेनापति जिला
6) तमेंगलोंग जिला
7) थौबल जिला
8) उखरुल जिला
9) इंफाल वेस्ट जिला
10) कक्चिंग जिला
11) जिरीबाम जिला
12) कमजोंग जिला
13) नोनी जिला
14) फेरजॉल जिला
15) टेंगनू पाल जिला
16) कांगपोकपि जिला

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

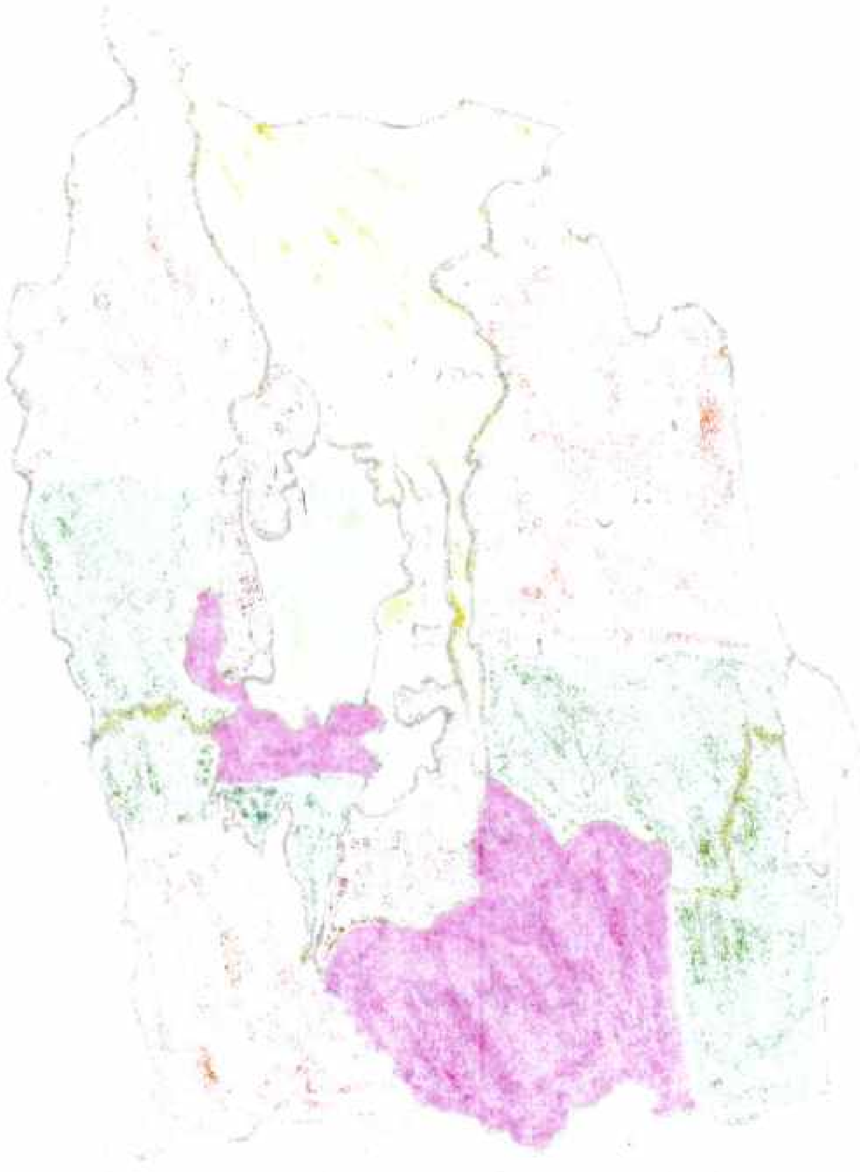

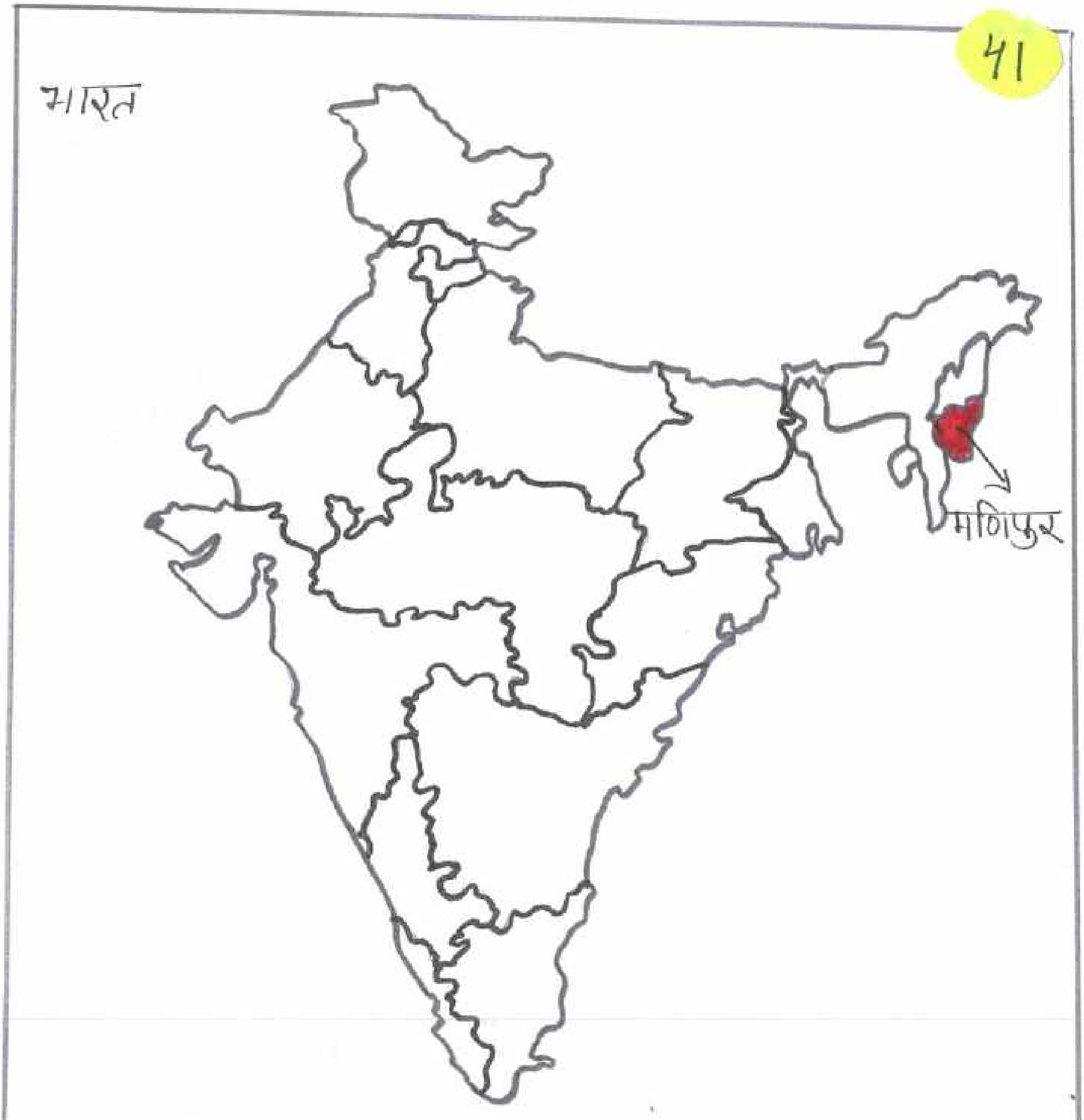

राजधानी	इम्फाल
जनसंख्या	28,55,794
घनत्व	129/किमी^{2}
क्षेत्रफल	22,347 किमी^{2}
जिले	16
राजभाषा	मणिपुरी

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kaneri, Mandar, Ranchi

मणिपुर भारत का एक पूर्वोत्तर राज्य है। इसकी राजधानी है इंफाल। मणिपुर के पड़ोसी राज्य हैं। उत्तर में नागालैंड और दक्षिण में मिज़ोरम, पश्चिम में असम, और पूर्व में इसकी सीमा म्यांमार से मिलती है। इसका क्षेत्रफल २२,३४७ वर्ग कि॰ मी॰ (8,628 वर्ग मील) है। यहाँ के मूल निवासी मेइती जनजाति के लोग हैं, जो यहां के घाटी क्षेत्र में रहते हैं। इनकी भाषा मेइतिलोन है, जिसे मणिपुरी भाषा भी कहते हैं। यह भाषा ११९२ में भारत में संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ी गई है और इस प्रकार इसे एक राष्ट्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त हो गया है। यहाँ के पर्वतीय क्षेत्रों में नागा व कूकी जनजाति के लोग रहते हैं। मणिपुरी को एक संवेदनशील सीमावर्ती राज्य माना जाता है।

Attested
Principal
Bethathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

परिचय

मणिपुर का शाब्दिक अर्थ 'आभूषणों की भूमि' है। भारत की स्वतंत्रता के पहले यह रियासत थी। आजादी के बाद यह भारत का एक केंद्रशासित राज्य बना। यहां की राजधानी इम्फाल है। यह संपूर्ण भाग पहाड़ी है। जलवायु गरम एवं तर है तथा वार्षिक वर्षा का औसत 65 इंच है। यहाँ नागा तथा कुकी जाति की लगभग 60 जनजातियाँ निवास करती हैं। यहां के लोग संगीत तथा कला में बड़े प्रवीण होते हैं। यहाँ यद्यापि कई बोलियाँ बोली जाती हैं। पहाड़ी ढालों पर चाय तथा घाटियों में धान की उपजें प्रमुख हैं। यहीं से होकर एक सड़क बर्मा को जाती है।

इस राज्य में प्राकृतिक संसाधनों का प्रचुर भंडार है। यहां की प्राकृतिक छटा देखने योग्य है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

यहाँ तरोताजा करने वाले जल प्रपात हैं, रंग-बिरंगे फूलों वाले पौधे हैं, दुर्लभ वनस्पतियाँ व जीव-जंतु हैं, पवित्र जंगल हैं, हमेशा बहने वाली नदियां हैं, पर्वतों-पहाड़ियों पर बिखरी हरी विमा है और टेढ़े-मेढ़े गिरने वाले झरने हैं। लोकटक झील यहाँ की एक महत्वपूर्ण झील है। भौतिक आधार पर राज्य को दो भागों में बांटा जा सकता है, पहाड़ियाँ व घाटियां। चारों ओर पहाड़ियाँ हैं और बीच में घाटी है। इस ध प्रकार प्रकृति की प्राचीन गौरव है। राज्य की कला व संस्कृति समृद्ध है जो विश्व मानचित्र पर इसकी समृद्धि को दर्शाती है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

महाभारतकालीन मणिपुर

महाभारतकालीन प्राचीन मणिपुर राजकुमारी चित्रांगदा, अर्जुन पचात पुत्रो बब्रुवाहन से उल्लेखित मिलते हैं। महाभारत में योद्धा बाबरूवासन, अर्जुन और मणिपुर की राजकुमारी चित्रांगदा के पुत्र थे। महारथी अर्जुन राजा चित्रवहाना की पुत्री चित्रांगदा के साथ प्रेम हुआ था। मणिपुर भ्रमण के दौरान अर्जुन ने चतरंगड़ा को सतरंगी शिरोइ लिली फूल देकर प्रभावित किया था जो आज भी बिष्णुप्रिया मणिपुरी नाम के सम्प्रदाय सम्प्रदाय की पौराणिक वर्णन में पाए जाते हैं।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हस्तशिल्प

देश की विभिन्न हस्तशिल्प कलाओं में राज्य के हस्तशिल्प उद्योग का अनूठा स्थान है। इसके अंतर्गत बांस व बेंत के बने उत्पादों के साथ-साथ मिट्टी के बर्तन बनाने की संस्कृति भी शामिल हैं। मणिपुर में मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रथा काफी पुरानी है और यह उद्यम मुख्यत: एंड्रो, सिकमाई, चैरन, थोंगजाओ आदि जिले में किया जाता है। चूंकि बांस व बेंत काफी मात्रा में उपलब्ध है, टोकरी बुनना यहां के लोगों का लोकप्रिय व्यवसाय बन गया है। इसके अतिरिक्त मछली मारने के उपकरण भी बेंत व बांस के बनाए जाते हैं। घरेलू के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इन सभी उत्पादों की काफी मांग है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हथकरघा

हथकरघा उद्योग राज्य का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है। यहां यह उद्योग अनादि काल से फल-फूल रहा है। राज्यपथ में यह सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध करा रहा है खासकर महिलाओं को। मणिपुर के प्रमुख हथकरघा उत्पादक साड़ी, चादर, पर्दे, फैशनवाले कपड़े, तकिए के कवर आदि हैं। अधिकांश जुलाहे जिन्हें हुनर व महीन डिजाइनिंग के लिए जाना जाता है। वे वांग खाई बायोन कांपू, कोंगमान, खोंग मैन उल्ला लक आदि से हैं जो उत्कृमस्टन सिल्कन आदि उत्पादों के लिए प्रसिद्ध हैं। मणिपुरी कपड़े व शॉलों की राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय बाजारों में काफी मांग है। तीन सरकारी एजेंसियां हथकरघा उत्पादन का काम करती हैं ये हैं - मणिपुर डेवलपमेंट सोसायटी (MDS) मणिपुर हैंडलूम एंड हैंडीक्राफ्ट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (MHHDC) मणिपुर स्टेट हैंडलूम वीवर्स को-ऑपरेटिव सोसायटी (MSHWCS)

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कृषि और खाद्य प्रसंस्करण

राज्य में कृषि के अनुकूल परिस्थितियां हैं। यहाँ की जलवायु और मिट्टी, कृषि व बागवानी प्रायः सभी फसलें उगाने के लिए उपयुक्त है। राज्य में प्रचुर मात्रा में धान, गेहूँ, मक्का, दलहन व तिलहन (जैसे तेल, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी आदि) की खेती की जाती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न फलों जैसे अनानास, नींबू, केला, नारंगी आदि और सब्जियां जैसे फूलगोभी, बंदगोभी, टमाटर व मटर आदि का उत्पादन किया जाता है। इसके फलस्वरूप खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र, कृषि, बागवानी, मछली पालन, मुर्गी पालन, पशु पालन और वनों के विविधीकरण तथा वाणिज्यीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस उद्योग के महत्व को देखते हुए राज्य सरकार ने इंफाल में खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण केंद्र और 'खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण हॉल' की स्थापना की है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

पर्यटन

अपनी विविध वनस्पतियों व जीव-जंतुओं के कारण मणिपुर को 'भारत का आभूषण' व 'पूरब का स्विट्जरलैंड' आदि विविध नामों से संबोधित किया जाता है। लुभाने वाले प्राकृतिक दृश्यों, में विलक्षण फूल-पौधे, निर्मल वन, लहराती नदियां, पहाड़ियों पर छाई हरियाली शामिल है। इन सबके अलावा पर्यटकों के लिए कई आकर्षण हैं जो राज्य में पर्यटन के विकास के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है।

श्री गोविंद जी मंदिर, खवारीम बंद बाजार युद्ध कब्रिस्तान, शहीद मीनार, नुपी लान (महिलाओं का युद्ध) मेमोरियल कॉम्प्लेक्स, खोंघापात उद्यान, आईएनए मेमोरियल (मोइरांग), लोकटक झील, कीबूल लामजो राष्ट्रीय उद्यान, विष्णुपुर स्थित विष्णु मंदिर, सेंड्रा, मोरेह सिराय गांव, सिराय की पहाड़ियां, डूको घाटी, राजकीय

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

50

अजायबघर, कैना पर्यटक निवास, खोंगजोम वार मेमोरियल आदि मणिपुर के कुछ महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल है। मणिपुर देश के सुदूर उत्तर पूर्वी छोर पर स्थित है और, इसका अधिकांश पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहाँ निवेश के कई अवसर हैं। यहाँ कई ऐसे क्षेत्र भी हैं जहाँ निवेशकों को आकर्षित करने के लिए काफी संभावनाएं हैं।

यहाँ के दर्शनीय स्थलों में इम्फाल, उखरूल प्रसिद्ध हैं। इम्फाल में कांगला पार्क, गोविंद मंदिर वहां के बाजार, टीकेन्द्रजित पार्क प्रसिद्ध हैं तो उखरूल की पहाड़ियां प्रसिद्ध हैं। चुड़ाचांदपुर जिले में लोकतक झील प्रसिद्ध है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

अर्थव्यवस्था

कृषि व कृषि आधारित उद्योग अर्थव्यवस्था का आधार हैं। राज्य सूचना प्रौद्योगिकी आधारित व्यवसायों के लिए एक उपयुक्त स्थान है। यहाँ उच्च शिक्षा की व्यवस्था है, यहां निवेश की अपार संभावनाएं हैं, खासकर कृषि व खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में हथकरघा, दस्तकारी और पर्यटन के क्षेत्र में कई संभावनाएं हैं। इन क्षेत्रों में निवेशकों को आकर्षित करने के लिए सरकार ने कई नीतियां तैयार की हैं साथ ही निवेशकों को आकर्षित करने के कई प्रोत्साहन देने की भी घोषणा की गयी है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

भौगोलिक स्थिति

भारत के पूर्वी सीमा पर स्थित यह राज्य 23.83 डिग्री उत्तर और 25.68 डि० उत्तर अक्षांश व 94.78 डिग्री पूर्वी देशांतर के बीच पड़ता है। एक ओर तो पूर्व में म्यांमार है तो नागालैंड उत्तर-पश्चिम दिशा में हैं, तो मिज़ोरम दक्षिण में है। यह पूरे 22,327 किलोमीटर में फैला है।

मणिपुर की भौगोलिक स्थिति दर्शनीय है। उत्तरी तथा पूर्वी इलाकों में ऊंची पहाड़ियां हैं और मध्य भाग में मैदानी समतल है। यहां हर पहाड़ के बीच में कोई न कोई नदी बहती हैं। इम्फाल नदी यहां की प्रमुख नदी है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

मणिपुर के लोग

यहाँ तीन प्रमुख जनजातियां निवास करती हैं। घाटी में मीतई जनजाति और बिष्णुप्रिया मणिपुरी रहती हैं तो नागा और कुकी-चिन जनजातियाँ पहाड़ियों पर रहती हैं। प्रत्येक जनजाति वर्ग की खास संस्कृति और रीति रिवाज हैं जो इसके नृत्य, संगीत व पारंपरिक प्रथाओं से दृष्टिगोचर होता है। मणिपुर के लोग कलाकार होते हैं साथ ही सृजनशील होते हैं जो उनके द्वारा तैयार खादी व दस्तकारी के उत्पादों में झलकती है। ये उत्पाद विश्वभर में अपनी डिज़ाइन, कौशल व उपयोगिता के लिए जाने जाते हैं। यहां नेपाल से आकर बसे नेपालियों की भी काफी संख्या है, जो मणिपुर के कई इलाकों में बसे हैं।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

सतरंगी शिरोइ लिली

मणिपुर को देश की 'ऑर्किड बास्केट' भी कहा जाता है। यहाँ ऑर्किड पुष्प की 500 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। समुद्र तल से लगभग 5000 फीट की ऊंचाई पर स्थित शिरोइ पहाड़ियों में एक विशेष प्रकार का पुष्प शिरोइ लिली पाया जाता है। शिरोइ लिली का यह फूल पूरे विश्व में केवल मणिपुर में ही पैदा होता है। इस अनोखे और दुर्लभ पुष्प की खोज फ्रैंक किंग्डम वॉर्ड नामक एक अंग्रेज ने 1946 में की थी। यह खास लिली केवल मानसून के महीने में पैदा होता है। इसकी विशेषता यह है कि इसे सूक्ष्मदर्शी से देखने पर इसमें सात रंग दिखाई देते हैं। इस अनोखे लिली को 1948 में लंदन स्थित रॉयल हॉर्टिकल्चरल सोसाइटी ने मेरिट प्राइज से भी नवाजा था। हर वर्ष उखरुल जिले में शिरोइ लिली फेस्टिवल का आयोजन बड़ी धूम-धाम से होता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बिनलक्ष्मी नेप्राम

बिनलक्ष्मी नेप्राम एक मानवीय, लेखक और महिला कार्यकर्ता है, जो लिंग अधिकारों की वकालत और महिलाओं के नेतृत्व में निरस्त्रीकरण आंदोलनों के उद्देश्य से बंदूक संस्कृति को गिरफ्तार करने और विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत में अपने गृह राज्य मणिपुर के लिए शांति लाने के उद्देश्य से है। मणिपुर और उत्तर-पूर्व भारत में इस क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें "द फेस एंड वॉयस ऑफ नार्थ ईस्ट" नाम से जाना जाता है।

नेप्राम ने 2004 में कंट्रोल आर्म्स फाउंडेशन ऑफ इंडिया, मणिपुर महिला गन सर्वाइवर्स नेटवर्क, मणिपुर

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri Mandar, Ranchi

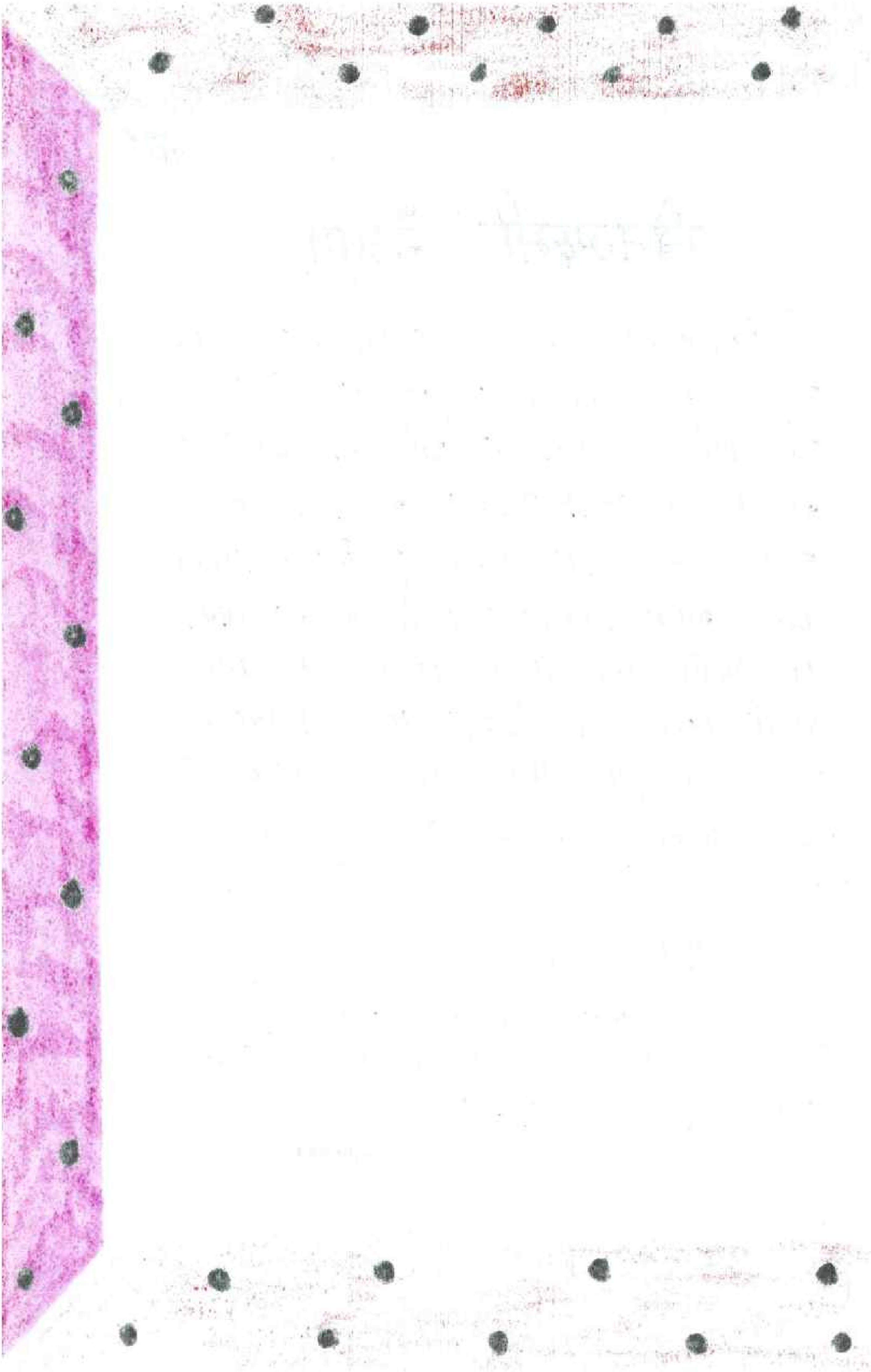

और महासचिव कंट्रोल आर्म्स फाउंडेशन ऑफ इंडिया (CAFI) जैसे कई संस्थानों की स्थापना की है।

जीवनी

नेप्राम का जन्म पूर्वोत्तर भारत के मणिपुर के इम्फाल में हुआ था। उनके माता पिता नेपराम बिहारी और वंसेम्बम इबमहल हैं। वह हिंसा और खून खराबे के माहौल में इम्फाल में पली-बढ़ी, जिसने उसके भविष्य के काम को आकार दिया और जब वह पैदा हुई तो सेना द्वारा लगाए गए इम्फाल में एक सामान्य कर्फ्यू भी था। उन्होंने इम्फाल में स्कूली शिक्षा प्राप्त की और अपनी हाई स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट परीक्षा में दूसरी रैंक प्राप्त की, जिसके लिए

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

उन्हें अनुसाना और गौरी मेमोरियल अवार्ड मिला। वह दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातकोत्तर डिग्री और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में दक्षिण एशियाई अध्ययन में मास्टर ऑफ फिलॉसफी की डिग्री प्राप्त करती है।

नेप्राम भारत - म्यांमार / बर्मा क्षेत्र में छोटे हथियारों के शमन पर शोध करने के लिए प्लॉशर फेलोशिप के प्राप्तकर्ता हैं। उन्हें "महिलाओं और शस्त्र-निरस्त्रीकरण" के विशिष्ट प्रासंगिकता के संघर्ष समाधान और शांति प्रक्रिया में अपने शोध कार्य के लिए दलाई लामा फाउंडेशन के WISCOMP स्कॉलर ऑफ पीस अवार्ड भी मिला है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi